सेठ सुदर्शन

(A) सेठ सुदर्शन का पूर्व भव - सुगम नामक ग्वाला मुनि को तेज धूप में शिला पर बैठता देखता है तथा आश्चर्यचकित होता है।

ग्वाला कौन बैठो है ये भाई इतनी धूप में। जा के लाने धूप नहीं लग रही का।

महिला ① ये निर्ग्रंथ मुनिराज है आयो - इनके दर्शन करते है।

महिला ② ये ऐसे मुनिराज है जो की दिन में एक बार भोजन - पानी आहार के रूप में ग्रहण करते है।

महिला ① ये हमेशा २८ मूलगुणो का पालन करते है।

महिला ② आयो इन्हें नमस्कार करो।

ग्वाला जय हो मुनिराज की जय हो।
(भजन)

(A) ग्वाला घर जाता है

ग्वाला सुनती हो कहा चली गई (दरवाज़ा खटखटाते हुए)

~~**पत्नि** चिल्ला काये रहे हो बात बताओ का है~~

पत्नि खोल तो रहे है दरवाजा रुक तो जाओ। चिल्ला काये रहे हो।

Scanned by CamScanner

ग्वाला — समझ नहीं आ रही इतनी देर से चिल्ला रहे है। आवाज दब पाए हमाई। तो सब समझ में आ जाए तुमाई। दिमाक खराब करती हो।

पत्नि — चिल्ला काये रहे हो बात बतायो का हो गयो।

ग्वाला — बात - बताओ, बात - बताओ। बात बताने ही तो चिल्ला रहे है।
मुनिराज बैठे है जंगल में, कपड़ा नहीं है उनके पास पहनवे।

पत्नि — तो हम का करे।

ग्वाला — कपड़ा दो - कपड़ा कई हम का करे।

पत्नि — हमाये इते का कपड़ा को पेड़ लगो है, जो कपड़ा मांग रहे हो हमसे।

ग्वाला — तुमसे तो बात करवो बेकार है। जाओ निकलो। हम कह रहे है जाओ।

(नि) — ग्वाला कपड़े से मुनि का पसिना पोंछता है। (भजन)

ग्वाला — नमस्कार महाराज

मुनि — धर्मवृद्धि हो।

ग्वाला — हे महाराज मैं आपके जैसा कब बन पाऊगा।

मुनि - हे भव्य जीव मैं तुम्हें महामंत्र देता हूँ जिसके बोलने तथा जाप देने से तुम स्वर्ग व मोक्ष को प्राप्त कर सकते हो। ये णमोकार महामंत्र मंत्र है। मेरे साथ बोलो।
(णमोकार मंत्र बोलता है।)

ग्वाला - धन्य हो महाराज धन्य हो। नमस्कार।

(नी) ग्वाला घर जाता है।

ग्वाला - हम कह रहे हैं खोलो दरवाज़ा।

पत्नि - इतनी लेट काहे आए हो। पता नहीं सेठ के पास जाने है।

ग्वाला - का कह रही हो। जलदी बांध रोटी जलदी कर हम कह रहे जलदी बांध समझ में नहीं आये कछू।

(नी) ग्वाला सेठ के यहाँ देरी से पहुँचता है।

सेठ - इतनी देर कैसे हो गई। रोज तो जलदी आते हो।

ग्वाला - अरे सेठ जी का मत पूछो भागत-भागत आए हैं अभी तक खाना भी नहीं खायो मैंने।

सेठ - पहला पेट पूजा फिर काम दूजा। चलो खाना खाते हैं।

Scanned by CamScanner

(A) खाना खाते वक्त वह ग्वाला णमोकार मंत्र पढ़ता है। वहीं सेठ सुन लेता है।

सेठ — अरे ये तो महामंत्र है। ये तुम्हे कहाँ से मिला।

ग्वाला — इसारे से सारी कथा सुनाता है।

सेठ — धन्य है तुम्हारे भाग्य। धन्य है वो घड़ी। जिसमे तुम्हे ऐसे मुनिराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। जिनके दर्शन को देवता भी तरसते हैं। अहो भाग्य तुम्हारा।

ग्वाला — ठीक है सेठ जी मैं निकलता हूँ। अरे! उन मुनिराज का जीवन कैसा होगा जिनके दर्शन को देवता भी तरसते है मुझे भी उनके जैसा बनना है। णमो.....

(A) उसी समय वहाँ भीषण बारिश होती है परंतु जब ग्वाला पुल पार करने लगता है तब तलाब के पानी में गिर जाता है और मर जाता है।

(A) अगले जन्म में वह सेठ वृषभदत्त के पुत्र के रूप में जन्म लेता है और जब वह बड़ा होता है तो देवी मनोरती से इसकी शादी हो जाती है।

(A) एक बार नगर में एक मुनिराज पधारते है उनके दर्शन हेतु सेठ वृषभदत्त जाते हैं तथा उन्हे वैराग्य आ जाता है और वे मुनि

Scanned by CamScanner

बन कर बिहार कर जाते है।

(A) सारा भार सुदर्शन के ऊपर आ जाता है तथा वह सेठ सुदर्शन कहलाने लगते है। तथा धर्म की प्रभावना व भगवान की भक्ति मे सेठ का खूब मन लगता है।

(A) एक दिन सुदर्शन सेठ और उनका मित्र कपिल बाग मे टहल रहे थे उनके बीच धार्मिक बात चल रही थी। तभी कपिल की पत्नि कपिला सेठ सुदर्शन पर मोहित हो जाती है।

कपिला — आ हा हा हा कितना सुंदर पुरुष है इसने तो देवो को भी मात दे दी इसके बिना तो मेरा जीवन व्यर्थ है अतः अब मुझे इनसे मिलने का कुछ न कुछ उपाय सोचना चाहिए।

(A) इस प्रकार कपिला के दुष परिणाम होते है और व अपना शील वा सुदर्शन का शील भंग करने के लिए आतुर होती है। कपिला दासी को बुलाती है।

कपिला — दासी इधर आओ। दासी तुम इस नगरी के सेठ सुदर्शन के पास जाओ और कहो की आपके दोस्त तकलीफ में है। अतः वह तुम्हारे साथ तुरंत आएगें।

दासी — जी सेठानी जी

(A) (दासी सेठ के घर जाती है) (A)

दासी — प्रणाम सेठ जी आपको मेरे साथ चलना होगा आपके मित्र कपिल संकट मे है।

सेठ — अच्छा ऐसी बात है। चलो मैं चलता हूँ।

सू — सेठ कपिला के पास जाते हैं जब घर पहुँचते हैं तो कपिल घर पर नहीं होता है तो सेठ कपिल को खुब अवाज़ लगाते हैं।

सेठ — कपिल - कपिल कहाँ हो तुम, क्या हुआ तुम्हे।

कपिला — कपिल अभी बाहर गया है कृपया कर तुम मेरी इच्छा पूर्ण करो। मैं तुम्हारे रूप और सौंदर्य पर मोहित हो गई हूँ।

सेठ — आप जैसा समझ रही हो मैं वैसा नहीं कर सकता। आपको पता नहीं है की मैं एक नपुन्सक हूँ।

कपिला — ये क्या कह रहे हो तुम चले जायो निकल जायो मेरे घर से। आज के बाद तुम कभी भी मेरे सामने मत आना।

सू — इस प्रकार कपिला सेठ सुदर्शन के प्रति वासना भाव जोड़ देती है।

सू — सेठ सुदर्शन और गजवाहन राजा एक दिन बगिचे में सैर कर रहे थे। तबही राजा गजवाहन की पत्नि सेठ सुदर्शन पर मोहित हो जाती है।

रानी — अरे वाह। क्या सौंदर्य है इसके सामने तो कामदेव भी कुछ नहीं, वाह - वाह - बहुत खूब।

Scanned by CamScanner

पिला — हे रानी मैंने लोगो से सुना था की ये नपुन्सक है।

रानी — अरे ये क्या कह रही हो। ये सब झुठ है तुम्हे शायद पता नहीं इनकी गिनती विशिष्ट सज्जनों तथा मूल रत्नों में होती है। तुम ये कैसे सोच सकती हो। की ये नपूंन्सक है और ये तो मैं मान ही नहीं सकती।

कपिला — रानी आपके जैसे ही मेरे मन में भी विषय वासना जागी थी तब इनको मैंने अपने घर में बुलाया। और इन्होनें स्वंय ये बात मुझसे आकार कही। की ये नपुंन्सक है।

रानी — हे विवेकहीन दासी शायद तुम्हे पता नहीं की वे इतने धार्मिक है कि इन्होनें अपने शील की रक्षा के लिए ऐसा किया होगा। इन्होनें अपने को बचाने के लिए तुमसे झुठ बोला होगा।

कपिला — (गुस्से में) हे रानी आप अगर इस नगर की रानी हो तो आप इस सेठ के साथ अपनी विषय वासना पूर्ण करके बतायो। तबही में मानूंगी की आप इस नगर की सच्ची रानी हो।

A — इस प्रकार कपिला के कटुक वचन रानी को चुब जाते है और वह अपनी वासना को पूरा करने का प्रण लेती है।

(A) सेठ सुदर्शन हर अष्टमी - चौदस को शमशान में आकर ध्यान करते थे। ~~~~ रानी को पता चलते ही वह सिपाईयो को बुलाती है।

रानी — सिपाहीयो जाओ और सेठ सुदर्शन को ढूंढो और वह जहां भी हो उसे हमारे पास लेकर आयो। ~~~~

सिपाही — जो आज्ञा महारानी जी।

(A) सिपाही सेठ को ध्यान अवस्था मे ही लेकर महल पहुंचते है।

रानी — हे सुदर्शन तुम नही जानते मैं तुम्हे ही अपना पति मानती हूं। ऐसा सुख तो देवो को भी नहीं मिला जो तुम्हारे पुण्य प्रताप से तुम्हें मिल रहा है। इस समय का लुत्फ उठायो सेठ।

(A) रानी नाँच कर अपना सौंदर्य दिखाती है। इस प्रकार अनेको प्रयास के बाद भी सेठ सुदर्शन अपने ध्यान से नहीं डिगें ~~फि~~ फिर सुबह होते ही जब वह अपनी आँख खोलते है तो बोलते है।

सेठ — क्षमा करे महारानी मैं यहां कैसे आया।

रानी — मैं तुम पर मोहीत हो गई हूँ मैं चाहती हूँ की तुम मेरी काम वासना ~~~~ को पूर्ण करो। हे सुदर्शन मान जायो नही तो मैं अपने प्राण त्याग दूंगी। मुझे जीवनदान दो

Scanned by CamScanner

मान जाओ सुदर्शन - मान जाओ।

सेठ — मैं ऐसा नहीं कर सकता ये आप क्या कह रही हो। ये संसार असार है यहाँ एक वासना खत्म नहीं होती की दूसरी शुरू हो जाती है। यहा से निकलकर मैं सबसे पहले दिक्षा धारण करूंगा।

रानी — (गुस्से में) दीक्षा तो तब लोगे ना जब यहाँ से जिन्दा बचकर जा पाओगे। अब मैं तुम्हे बताती हूँ। बचाओ - बचाओ
(रानी अपने कपड़े फाड़ती है नाखून से अपनी शरीर को नोंचती है तभी राजा और सिपाहीयों का प्रवेश होता है।)

राजा — रानी आपकी यह दुर्दशा कैसे हुई।

रानी — आप जिसे शीलबान समझते थे। उसने इस राज्य की रानी पर हाथ डाला है। हे राजन ये काम पीड़ा का प्यासा है। इसे निकाल दो नहीं तो इसे कड़ी - से कड़ी सजा दो।

राजा — तेरा ये दुस्साहस की तुने मेरी रानी पर हाथ डाला तुझे ऐसा दण्ड मिलेगा की आज के बाद कोई भी कभी भी किसी पर इस प्रकार का कुकृत्य नहीं करेगा।
डाल दो इसे काल कोठरी मे।
दो दीन बाद इसे फाँसी पर चढ़ा देना।

A — सेठ सुदर्शन को फाँसी पर चढ़ाया जाता है देवो के द्वारा फाँसी का फंदा फूलो को हार बन जाता है। फिर सेठ वहाँ से निकल कर दीक्षा धारण करते है और मोक्ष को प्राप्त होते है।

Scanned by CamScanner

सि.① ~~क्या~~ पता है कि 2 दिन पूरे हो चुके हैं

सि.② अरे हाँ! चलो सेठ सुदर्शन को ~~के~~ ~~के~~
फाँसी देने ले चलें।

सि.① चलो सेठ जी! आपके फाँसी का वक्त
हो गया है।

सेठ सु. — ठीक है चलो।

सि.② — किसका इंतजार कर रहे हो, वक्त
हो गया है फाँसी पर चढ़ा दो इनको.

देव — अरे ये मैं क्या देख रहा हूँ मध्यलोक
में ऐसे महान पुरुष को फाँसी दी जा
रही है। धर्म की रक्षा के लिए इनकी
जरूरत है, मैं ऐसा नहीं होने दूँगा.

(A) ——— फाँसी के बाद

~~देव~~ — ~~जब~~

राजा - अरे ये ~~के~~ फाँसी का फंदा फूलों का
हार कैसे बन गया। जरूर सेठ जी
निर्दोष हैं और ये जैन धर्म का प्रताप है कि
ऐसे महापुरुष की रक्षा ~~के~~ स्वयं ही हो जाती है।

देव - मुझे लगता है, ~~यही ठीक हुआ~~। जरूर ~~के~~ इन महापुरुष
~~के~~ ~~के~~ का मोक्ष जाना निश्चित है तभी तो
मेरी विद्या इनके काम आ सकी।
बोलो जैन धर्म की जय!

(A) ———